JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

(DEEMED UNIVERSITY)

RESEARCH ELIGIBILITY TEST (RET) - 2017

PAPER– II (CONCERN SUBJECT)

PRAKRIT

DATE OF EXAMINATION : JULY 27, 2017

ROLL NO. : **SIG. OF INVIGILATOR**

TIME : 01.30 HOURS **MARKS : 75 X 2 = 150**

NOTE :

1. All questions are compulsory and of objective type. / सभी प्रश्न अनिवार्य एवं वस्तुनिष्ठ हैं।
2. All questions carry equal marks. / सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
3. Only one answer is to be given for each question. / प्रत्येक प्रश्न का एक ही उत्तर देना है।
4. If more than one answer is marked, it would be treated as wrong answer. / एक से अधिक उत्तर देने की दशा में प्रश्न के उत्तर को गलत माना जायेगा।

1. प्राकृत भाषा में स्वर पाये जाते हैं –

   (क) पाँच (ख) छह (ग) सात (घ) आठ

   ( )

2. कौन सा कथन असत्य है –

   (क) प्राकृत में असंयुक्त अवस्था में 'ङ' और 'ञ' का प्रयोग नहीं पाया जाता है।

   (ख) प्राकृत में पञ्चमाक्षर (ङ ञ ण न म) का संयुक्त दशा में अनुस्वार (–) विकल्प से होता है।

   (ग) प्राकृत में स्वररहित अन्त्य व्यञ्जन का लोप नहीं होता है।

   (घ) प्राकृत में 'द्विवचन' के स्थान पर 'बहुवचन' का प्रयोग पाया जाता है।

   ( )

3. प्राकृत में शब्द के प्रकार पाये जाते हैं –

   (क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

   ( )

4. यह कथन सत्य नहीं है –

   (क) प्राकृत में चतुर्थी और षष्ठी विभक्ति के लिए समान प्रत्यय होते हैं।

   (ख) प्राकृत में सामान्यतः चार काल होते हैं।

   (ग) प्राकृत में चतुर्थी के स्थान पर षष्ठी का प्रयोग पाया जाता है।

   (घ) प्राकृत में सामान्यतः 37 व्यञ्जन पाये जाते हैं।

   ( )

5. हेमचन्द्रकृत प्राकृत व्याकरण के 'आर्षम्' सूत्र से तात्पर्य है –

(क) मागधी प्राकृत (ख) महाराष्ट्री प्राकृत

(घ) जैन आगमों की प्राकृत (घ) शिलालेखीय प्राकृत

( )

6. प्राकृत में कारक होते हैं –

(क) पाँच (ख) छह (ग) सात (घ) आठ

( )

7. यह कथन अयर्थाथ है –

(क) प्राकृत में दो पदों में सन्धि होती है।

(ख) प्राकृत में दो पदों में विकल्प से सन्धि होती है।

(ग) प्राकृत में एक पद में भी सन्धि पाई जाती है।

(घ) प्राकृत में सन्धि नहीं होती है।

( )

8. समान स्वर सन्धि का उदाहरण है –

(क) दिणेस (ख) गंगोदय

(ग) विज्जालय (घ) सव्वोदय

( )

9. लोप सन्धि का उदाहरण है –

(क) नरीसर (ख) महेसि

(ग) महोसव (घ) सासणुदय

( )

10. अनुस्वार आगम का यह उदाहरण नहीं है –

(क) दंसण (ख) अँसु

(ग) मणसी (घ) उवरिं

( )

11. षष्ठी तत्पुरूष का उदाहरण है –

(क) जिणेण सरिसो (ख) लोगस्स सुहो

(ग) देवस्स थुई (घ) दिवं गओ

( )

12. 'दसवेयालियसुत्तं' की भाषा है –

(क) मागधी (ख) शौरसेनी

(ग) महाराष्ट्री (घ) अर्धमागधी

( )

13. 'सिद्धहेमशब्दानुशासनम्' में अर्थ प्राकृतम' से तात्पर्य है –

(क) अर्धमागधी (ख) शौरसेनी

(ग) महाराष्ट्री (घ) मागधी

( )

14. दिगम्बर परम्परा के आगम ग्रन्थों की भाषा है –

(क) महाराष्ट्री (ख) शौरसेनी

(ग) मागधी (घ) अर्धमागधी

( )

15. हाथीगुंफा अभिलेख से सम्बन्ध है –

(क) अशोक (ख) नन्दराज

(ग) खारवेल (घ) अजातशत्रु

( )

16. भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्र में प्राकृत के भेद गिनाए हैं –

(क) पाँच (ख) सात

(ग) तीन (घ) चार

( )

17. श्वेताम्बर परम्परा के प्राकृत आगमों की प्रमुख भाषा है –

(क) शौरसेनी (ख) महाराष्ट्री

(ग) अर्धमागधी (घ) मागधी

( )

18. 'प्राक् पूर्वं कृतं प्राकृतं बालमहिलादि सुबोध सकलभाषा निबन्धनभूतं वचनमुच्चयते' यह कथन है–

(क) वररूचि (ख) नभिसाधु

(ग) हेमचन्द्र (घ) क्रमदीश्वर

( )

19. 'प्रकृतिः संस्कृतम। तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्' यह कथन है –

(अ) हेमचन्द्र (ब) चण्ड

(स) वररूचि (द) नभिसाधु

( )

20. अर्धमागधी को कितनी देशी भाषाओं से नियमित कहा है –

(क) 15 (ख) 13 (ग) 20 (घ) 18

( )

21. दशवैकालिक चूर्णी के रचयिता हैं –

(क) हरिभद्र (ख) सिद्धसेन

(ग) अगस्त्यसिंह (घ) हेमचन्द्र

( )

22. 'प्राकृतप्रकाशः के लेखक हैं –

(क) हेमचन्द्र (ख) वररूचि

(ग) मार्कन्डेय (घ) चण्ड

( )

23. 'प्राकृतलक्षणम्' के रचयिता हैं –

(क) चण्ड (ख) वररूचि

(ग) सदानन्द (घ) क्रमदीश्वर

( )

24. प्राकृतसर्वस्वम्' के लेखक हैं –

(क) क्रमदीश्वर (ख) मार्कण्डेय

(ग) वररूचि (घ) चण्ड

( )

25. 'समराइच्चकहा' के रचनाकार हैं –

(क) सिद्धसेन (ख) हेमचन्द्र

(ग) हरिभद्र (घ) अकलंकदेव

( )

26. समुचित मिलान कीजिए –

(क) सिद्धसेन 1. पउमचरियं

(ख) विमलसूरि 2. वज्जालग्गं

(ग) हाल 3. सम्मइसुत्तं

(घ) जयवल्लभ 4. गाहा सतसई

( )

27. यह कथन सत्य नहीं है –

(क) शौरसेनी में 'त' के स्थान पर 'द' होता है।

(ख) मागधी में 'र' के स्थान पर 'ल' पाया जाता है।

(ग) अर्धमागधी में पुंलिंग के कर्ता कारक एकवचन में 'एकार' होता है।

(घ) महाराष्ट्री में 'स' के स्थान पर 'श' हो जाता है।

( )

28. छक्खंडागमसुत्तं के रचयिता हैं –

(क) गुणधर (ख) देवनंदि

(ग) पुष्पदंत भूतवलि (घ) जिनभद्र

( )

29. छक्खंडागमसुत्तं का प्रमुख प्रतिपाद्य है –

(क) आचारशास्त्र (ख) कर्मसिद्धान्त

(ग) प्रमाणशास्त्र (घ) नयवाद

( )

30. 'उत्तरज्झयणाणि' में अध्ययन है –

(क) 32 (ख) 34 (ग) 30 (घ) 36

( )

31. 'पूर्व' ग्रन्थ बताए गये हैं –

(क) 10 (ख) 11 (ग) 14 (घ) 16

( )

32. 'दृष्टिवाद' अंग के भेद हैं –

(क) पाँच (ख) तीन (ग) सात (घ) नव

( )

33. सम्बन्ध मिलान कीजिए –

(क) सम्मइपयरणं	1. हरिभद्र
(ख) विशेषणवती	2. नेमिचन्द्रसूरि
(ग) पवयणसारोद्धारो	3. सिद्धसेन
(घ) धम्मसंगहणी	4. जिनभद्रगणी

( )

34. कुवलयमाला कहाँ का लेखन स्थल है –

(क) जालोर (ख) जयपुर (ग) जोधपुर (घ) नागौर

( )

35. 'जोणिपाहुड' के लेखक हैं –

(क) देवसेन (ख) जिनसेन

(ग) धरसेन (घ) गुणधर

( )

36. 'कप्पूरमंजरी के रचयिता हैं –

(क) रूद्रट (ख) भामह

(ग) हेमचन्द्र (घ) राजशेखर

( )

37. रत्नावली' नाटिका के लेखक हैं –

(क) माघ (ख) भास

(ग) श्रीहर्ष (घ) दण्डि

( )

38. अर्धमागधी कोश के प्रणेता हैं –

(क) राजेन्द्रसूरि (ख) रतनचन्द्र

(ग) जगदीशचन्द्र (घ) पुण्यविजय

( )

39. 'पाइय–सद्द–महण्णवो' के लेखक हैं –

(क) हरगोविन्ददास (ख) बनारसीदास

(ग) ऋषभचन्द्र (घ) नरेशकुमार

( )

40. प्राकृत का छन्द विषयक ग्रन्थ है –

(क) प्राकृत रचना सौरभ (ख) प्राकृतपैगंलम्

(ग) पाइय गज्ज पज्जसंगहो (घ) प्राकृतलक्षणम्

( )

41. 'उवासगदसाओ' का सम्बन्ध है –

(क) अंग (ख) उवंग

(ग) छेयसुत्त (घ) मूलसुत्त

( )

42. 'उत्तरज्झयणाणि' की गणना होती है –

(क) छेदसूत्र (ख) मूलसूत्र

(ग) पइन्ना (घ) उपांग

( )

43. पाटलिपुत्र वाचना का नेतृत्व किया –

(क) नागार्जुन (ख) स्थूलभद्र

(ग) भद्रबाहु (घ) स्कंदिल

( )

44. मथुरा वाचना का प्रमुख था –

(क) स्कंदिल (ख) नागार्जुन

(ग) मलयगिरि (घ) स्थूलभद्र

( )

45. वलभी वाचना के प्रमुख थे –

(क) भद्रबाहु (ख) स्थूलभद्र

(ग) नागार्जुन (घ) स्कंदिल

( )

46. देवर्धिगणी के नेतृत्व में हुई वाचना थी –

(क) पञ्चम (ख) चतुर्थ

(ग) तृतीय (घ) द्वितीय

( )

47. द्वादशांग का दूसरा नाम है –

(क) त्रिपिटक (ख) दृष्टिवाद

(ग) गणिपिटक (घ) पूर्व

( )

48. आचारांग में अध्ययन हैं –

(क) सात (ख) पाँच

(ग) नौ (घ) ग्यारह

( )

49. चातुर्याम धर्म के उपदेशक हैं –

(क) ऋषभदेव (ख) नेमिनाथ

(ग) महावीर (घ) पार्श्वनाथ

( )

50. समवायांग में 'समवाय' से तात्पर्य है –

(क) समूह (ख) संग्रह

(ग) समाज (घ) स्थान

( )

51. 'व्याख्याप्रज्ञप्ति' में प्रज्ञप्ति' का अर्थ है –

(क) ज्ञान (ख) विज्ञप्ति

(ग) प्ररूपण (घ) आदेश

( )

52. यह कथन असत्य है –

(क) 'य' श्रुति किसी लुप्त व्यंजन का अवशेष है।

(ख) अ और आ के मध्य 'य' श्रुति होती है

(ग) जब पूर्व स्वर अ अथवा आ हो तब 'अ' या आ के साथ 'य' श्रुति व्यक्त की जाती है।

(घ) प्राकृत में 'य' श्रुति नहीं होती है।

( )

53. नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटकों में वार्तालाप होना चाहिए –

(क) महाराष्ट्री (ख) शौरसेनी

(ग) मागधी (घ) संस्कृत

( )

54. शौरसेनी का लक्षण है –

(क) 'त' के स्थान पर 'द'

(ख) 'प' के स्थान पर 'ब'

(ग) 'न' के स्थान पर 'ण'

(घ) 'र' के स्थान पर 'ल'

( )

55. हेमचन्द्र के अनुसार 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में आदेश होते हैं–

(क) दो (ख) तीन

(ग) चार (घ) पाँच

( )

56. दण्डी के अनुसार उत्तम प्राकृत है –

(क) शौरसेनी (ख) महाराष्ट्री

(ग) मागधी (घ) अर्धमागधी

( )

57. पैशाची पालि का ही एक रूप है, यह कथन है –

(क) पिशल (ख) याकोबी

(ग) ग्रियर्सन (घ) घाटगे

( )

58. आचारांग की चूर्णी के कर्ता हैं –

(क) भद्रबाहु (ख) जिनदासगणि

(ग) शीलांक (घ) मलयगिरी

( )

59. आचारांग सूत्र के वृत्तिकार हैं –

(क) अभयदेव (ख) हरिभद्र

(ग) भद्रबाहु (घ) शीलांक

( )

60. वनीपक माने गये हैं –

(क) तीन (ख) चार

(ग) पाँच (घ) छह

( )

61. नवांग वृत्तिकार हैं –

(क) मलयगिरी (ख) अभयदेव

(ग) हरिभद्र (घ) हेमचन्द्र

( )

62. 'पो वः' सूत्र का उदाहरण है –

(क) जुवइ (ख) वारि

(ग) उवासग (घ) पावक

( )

63. 'मृच्छकटिकम्' के रचयिता हैं –

(क) श्रीहर्ष (ख) वाक्पतिराज

(ग) कालिदास (घ) शूद्रक

( )

64. 'सेतुबन्ध' काव्य के प्रणेता हैं –

(क) शातवाहन (ख) प्रवरसेन

(ग) भास (घ) अश्वघोष

( )

65. 'हरिणो' रूप नहीं है –

(क) तृतीया एकवचन (ख) प्रथमा बहुवचन

(ग) पंचमी एकवचन (घ) षष्ठी बहुवचन

( )

66. 'युदि' इसका उदाहरण है –

(क) आदि स्वर लोप (ख) आदि व्यंजन लोप

(ग) विषमीकरण (घ) वर्ण व्यत्यम

( )

67. छेदसूत्रों का प्रमुख प्रतिपाद्य है –

(क) आचारविधि (ख) प्रायश्चितविधि

(ग) चर्याविधि (घ) कार्यविधि

( )

68. मूलसूत्र हैं –

(क) चार (ख) पाँच (ग) छह (घ) आठ

( )

69. इसिभासियाइं में अध्ययन हैं –

(क) 36 (ख) 40 (ग) 45 (घ) 48

( )

70. निर्युक्तियों के रचयिता हैं –

(क) हरिभद्र (ख) भद्रबाहु

(ग) सिद्धसेन (घ) मलयगिरि

( )

71. यह कथन असत्य है –

(क) चूर्णियाँ गद्य में लिखी गई हैं।

(ख) चूर्णियाँ पद्य में लिखी गई है।

(ग) चूर्णियों की भाषा प्राकृत–संस्कृत मिश्रित है।

(घ) चूर्णियों में प्राकृत की प्रधानता है।

( )

72. षट्खण्डागमसूत्र की टीका है –

(क) जयधवला (ख) महाधवला

(ग) धवला (घ) महाबन्ध

( )

73. गोम्मटसार के रचयिता हैं –

(क) वट्टकेट

(ख) शिवार्य

(ग) नेमीचंद्र सिद्धान्तचक्रवर्ती

(घ) नेमिचन्द्र सिद्धान्तिदेव

( )

74. तरंगवईकहा के लेखक हैं –

(क) धर्मघोषसूरि

(ख) अद्योतनसूरि

(ग) पादलिप्तसूरि

(घ) अमृतचन्द्रसूरि

( )

75. वसुदेवहिंडी के रचनाकार हैं –

(क) संघदासगणिवाचक

(ख) उमास्वाति

(ग) जिनभद्रगणि

(घ) जिनदासगणि

( )

●●●